उपसंहार

'हिन्दी का महिला नाटक: एक अध्ययन (कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर के विशेष संदर्भ में' नामक विषय पर शोधकार्य करने पर महिला नाटक तथा उससे संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान आकर्षित हुआ है। साहित्य जितना सामाजिक तथा लोकधर्मी है, नाटक का स्थान उससे भी कुछ आगे है। एक रंगमंचीय विधा होने के कारण नाटक का अपना अलग महत्व है जो साहित्य की अन्य विधाओं को अप्राप्य है। नाटक एक ऐसी विधा है जिसका विकास संस्कृत और पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतों के आधार पर हुआ है। ऐसे सुविकसित नाट्य-विधा की परंपरा में भारतेन्दु युग अपना महत्व रखता है। उसके बाद जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मी नारायण मिश्र, मोहन राकेश, हर्कृष्णप्रेमी, लक्ष्मीनारायण लाल आदि नाटककार स्वतंत्रतापूर्व नाटककारों की कोटि में ख्याति प्राप्त है। स्वतंत्रता के बाद नाटक साहित्य विकास की और उन्मुख हुआ। स्वातंत्र्योत्तर काल में विष्णु प्रभाकर, मुद्राराक्षस, शंकर शेष, सुरेन्द्र वर्मा, विभुकुमार, सुशीलकुमार सिंह, हबीब तनवीर, बादल सरकार, विजय तेन्दुलकर, भीष्मसाहनी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, हमीदुल्ला, रमेशबक्षी, मन्नु भंडारी, मृदुलागर्ग, मृणाल पांडे, मणिमधुकर, शांती महरोत्रा, कुसुम कुमार, त्रिपुरारी शर्मा, जैसे सशक्त नाटककारों ने नाट्य परंपरा को आगे बढाया है। जिस प्रकार समय का बदलाव सामाजिक गतिविधियों में परिवर्तन खडा करता है उसी प्रकार साहित्य में भी कालानुक्रम परिवर्तन आ पहुँचा है। ऐसी गतिविधियों में सबसे प्रमुख तथा अनिवार्य एक था महिला-लेखन। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में आये परिवर्तन के फलस्वरूप नारियाँ अपनी आत्माभिव्यक्ति के लिए उत्सुक हुई। जिसकी नतीजा यह है कि नाटक के क्षेत्र में भी महिलाओं की सशक्त उपस्थिति हो गयी। नाटक साहित्य में महिला लेखन की परंपरा स्वतंत्रतापूर्व श्रीमती लाली देवी से शुरू होती है। उसका नाटक 'गोपीचंद' 1934 में

प्रकाशित हुआ था। उसके बाद श्रीमती अनुरूपा देवी, श्रीमती तरामित्रा आदि स्वतंत्रतापूर्व महिला नाटककारों में प्रमुख रहीं। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद की महिला नाटककारों में मन्नु भंडारी, शांती महरोत्रा, मृदुला गर्ग, त्रिपुरारी शर्मा आदि नाटककारों ने महिला नाट्य लेखन की इस परंपरा को ओर अधिक संपन्न तथा समृद्ध किया है। इनके नाटकों की विशेषता यह रही कि वे समूचे समाज की गतिविधियों को पहचानकर, समाज तथा राष्ट्र की सारी समस्याओं को आत्मसात किये हैं। इनके राह पर चलने के लिए मृणाल पांडे, गिरीश रस्तोगी, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, विमला प्रभाकर, कुसुम कुमार, नादिरा ज़हीर बब्बर, आयशा अहम्मद जैसी अनेक लेखिकायें निकल पडी और अपने उद्यम में विजयी भी हुई है। इन सबों का नाट्य-साहित्य हिन्दी महिला लेखन को समृद्ध करने के साथ-साथ अपने लेखनीय गरिमा का परिचायक भी रहा।

हिन्दी नाट्य साहित्य में कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर की भूमिका विशेष मायना रखती है। मौलिक नाट्य लेखन के क्षेत्र में दोनों ने अपनी दक्षता का परिचय दिया है। इनके नाटक सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक धरातल के बदलते मूल्यों तथा आस्थाओं की आज्ञानुवर्ती रह गये हैं। कुसुम कुमार के सात नाटक उपलब्ध है वे हैं- 'ओम क्रांती क्रांती', 'सुनो शेफाली', 'संस्कार को नमस्कार', 'दिल्ली ऊँचा सुनती है', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी', 'रावणलीला', 'लश्कर चौक' आदि। इसके सभी नाटकों में समाज की सारी गतिविधियों का प्रतिफलन हुआ है। 'ओम क्रांती क्रांती' शिक्षा व्यवस्था की बदचलन को रेखांकित करता है तो 'सुनो शेफाली' राजनेताओं की कपटता का पोल खोलता है। 'संस्कार को नमस्कार' कपट समाजसेवियों के मुखौटे फाड देता है। वैयक्तिक असफलता तथा

परिस्थितियों से जूझनेवाला आम आदमी 'पवन चतुर्वेदी की डायरी' के केन्द्र में है। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक सरकारी अव्यवस्थाओं पर सघन प्रहार करता है। 'रावणलीला' कलाकारों की तथा नाट्यमंडलियों की जर्जरता का प्रत्यक्ष रूप उभारता है। 'सांप्रदायिकता' की विपत्ती का एहसास 'लश्कर चौक' नाटक का इतिवृत्त है।

नादिरा ज़हीर बब्बर के नाटकों में प्रमुख है 'सकुबाई', 'दयाशंकर की डायरी', 'जी जैसी आपकी मर्जी', 'सुमन और सना', 'आपरेशन क्लाउट बर्स्ट'। नादिरा जी के सभी नाटक अपने परिवेश के धड़कन से परिचित है। 'सकुबाई' तथा 'दयाशंकर की डायरी' एक व्यक्ति की अस्फलता तथा उसके कारणों पर प्रकाश डालता है। आतंकवाद और धार्मिक सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को 'सुमन और सना' तथा 'आपरेशन क्लाउट बर्स्ट' उकेरते हैं। दोनों नाटककार ने अपने समय और परिवेश को ध्यान में रखकर, अपने सामाजिक दायित्व को निभाया है। दोनों के नाटक अपने युग की समस्याओं को उकेरने में सफल हुए है। कुसुम कुमार के नाटकों में राज-सामाजिक नेताओं के पोल खोले है। समाज के कल्याण के लिए जो बाध्य है, उन्हीं से समाज का सत्यानाश हम देख पाते हैं। समाज सेवा को अपने स्वार्थ जीवन की पीढी बनाने वाले नेताओं की विकल नीतियों पर नाटक व्यंग्य करते हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत के अभिशापों में रिश्वतखोरी, प्रशासनिक भ्रष्टाचार आदि प्रमुख है। इनके नाटकों में ऐसी समस्याओं का विशद रूप से प्रकटीकरण है। आदमी की ज़िन्दगी पर ही, ऐसे सामाजिक अन्यायों का दूषित फल ज्यादा पडता है। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' इसका स्पष्ट उदाहरण है। पूर्वोत्तर राज्यों की समस्या, शरणार्थियों का दर्दभरा जीवन, सांप्रदायिकता से उजडा वातावरण, आतंकवाद का भीषण

परिणाम आदि मन को छूनेवाली समस्यायें इनके नाटकों में भरी पडी है। वैयक्तिक असफलता, विवाह-संबंधों में बिखराव, तलाक की समस्या, भ्रूणहत्या, लिंगविवेचन जैसे कटु यथार्थ का स्पष्ट रूप से नाटक वर्णन करते हैं। वर्तमान परिवेश के परिवर्तन के साथ ही आर्थिक शैक्षिक क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन उठ खडे हुए है। जिसके फलस्वरूप महंगाई, गरीबी आदि प्रश्न वर्तमान जीवन को तंग करते हैं। ऐसी आर्थिक मामलों को भी नाटककारों ने अपने नाटकों में चित्रित किये हैं। आम आदमी को कष्टता की ओर थकेलनेवाली आर्थिक नीतियों पर नाटक व्यंग्य करते हैं। शिक्षा का व्यावसायीकरण, अध्यापकों में कर्तव्य का अभाव आदि शिक्षा संबंधी प्रश्नों पर भी ये नाटककार सजग हुए है। आम तौर पर हम कह सकते है कि ऐसा कोई भी विषय नहीं है जिसकी ओर दोनों नाटककारों का ध्यान न रहा है। दोनों नाटककारों ने अपने-अपने नाटकों के ज़रिए आम आदमी की ज़िन्दगी को निकट लाने की कोशिश की है। इनके नाटक सचमुच युगीन यथार्थ का आईना रह गया है।

स्त्री-विमर्श हिन्दी-साहित्य में एक नई पहलू है, जिसमें नारियों के लिए आवाज उठायी जाती है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार, पश्चिमी सभ्यता का फैलाव, नई वैज्ञानिक उपलब्धियाँ आदि के कारण नारियों के परिवेश तथा कार्यमंडल में बहुत परिवर्तन हुए है। फलस्वरूप अपने अधिकार के लिए खडे होने को वे हमेशा आगे खडी रहीं। नारी समस्याओं को संवेदन शील रूप में अभिव्यक्ति देने में पुरुष लेखन से ज्यादा स्त्रीलेखन ही सक्षम दीख पडती है। कुसुम कुमार के 'सुनो शेफाली' 'संस्कार को नमस्कार', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी', 'लश्कर चौक' तथा नादिरा ज़हीर बब्बर के 'सकुबाई', 'जी जैसी आपकी मर्जी', 'सुमन और सना' आदि नाटक स्त्री विमर्श के सतह पर पूर्णतः जीत पाये हैं। यौनशोषण जैसी सामाजिक

कुरीतियों का चित्रण दोनों नाटककारों ने अत्यधिक सशक्त रूप में किया है। इसके अलावा अशिक्षित नारियों की पीडा, लिंगभेद की समस्या, भ्रूणहत्या जैसी वर्तमान समाज की समस्याओं को भी नाटकों में प्रमुख स्थान दिया गया है। नारी की रूदन कथा के साथ-साथ उसकी जीत की कहानियों को भी ये नाटककार, हमारे सम्मुख रखते हैं। 'सकुबाई' नाटक इसका प्रत्यक्ष नमूना है। नारी से संबंधित सारे पहलुओं पर प्रकाश डालने में दोनों के नाटक सफल हुए हैं।

शिल्पपरक खूबियों में कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर के नाटक स्तरीय देख पाते हैं। नाटक में शिल्पपक्ष के महत्व को ध्यान में रखकर उन्होंने शिल्प के नये आयामों को स्वीकार किया है। दोनों नाटककार कल्पना के उडान भरने के बदले आम आदमी के जीवन की कथा को अपने नाटकों में वस्तु पक्ष के रूप में चुन लिया है। आम आदमी के जीवन की परेशानियों के कद्र करके, उन्हीं परेशानियों को इनके नाटकों ने केन्द्र में रखा है। कुसुम कुमार तथा नादिरा ज़हीर बब्बर के सारे नाटक इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी', 'सुनो शेफाली', 'सकुबाई', 'जी जैसी आपकी मर्जी' आदि उनमें प्रमुख है। पात्र और चरित्र की अवधारणा को ध्यान में लेते समय देख पाते हैं कि उन्होंने अपने पात्रों का सृजन यथार्थता के फर्श पर किये हैं। उनके नाटकों के पात्र उच्च चरित्रवाले तथा आम वातावरण में पनपे हैं। आदर्श तथा यथार्थ पात्रों की भूमिका से संपन्न है उनके नाटक। 'सुनो शेफाली' की 'शेफाली', 'ओम क्रांती क्रांती' की 'थैलमा', 'लश्कर चौक' में 'कान्हा', 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' में 'माधोसिंह', 'संस्कार को नमस्कार' में 'संस्कार चंद' जैसे पात्र, इनके नाटकों के प्रमुख पात्रों में आते है। कुसुम कुमार के नारी पात्र विद्रोही भूमिका निभानेवाली है तथा अपने

आत्मसम्मान को बनाये रखने वाली है। नादिरा की नायिकायें आत्मसम्मान को कायम रखने की कोशिश करती भी है तथा अपने उद्यम में कभी-कभी पराजित भी दीख पडती है। संवाद और भाषा की दृष्टि से विविधता इनके नाटकों में प्राप्त है। कथ्यानुकूलता, व्यंग्यात्मकता पात्रानुकूलता जैसी संवादगत विशेषतायें इनके नाटकों में उपलब्ध है। लंबे, वर्णनात्मक संवादों को प्रयोग इनके नाटकों में प्रायः मिलते हैं। लेकिन ऐसे संवाद नाटक की गरिमा बढाने में काबिल सिद्ध हुए हैं। 'सकुबाई', 'दयाशंकर की डायरी' जैसे एकल नाट्यों में संवाद वर्णनात्मक रहा है जो परिवेश के अनुकूल है। भाषागत विशेषताओं में विविधता दोनों के नाटकों में खूब मिलती है। सरल भाषा का प्रयोग प्रायः अधिक नाटकों में मिलता है। व्यंग्यात्मकता, कथ्यानुकूलता, चित्रात्मकता आदि भाषा की विशेषताओं में प्रमुख है। हिन्दी भाषा के अलावा, उर्दु, खडीबोली, मराठी, अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग भी नाटक में ज्यादा मिल पाता है। रंगमंचीयता नाटक की अपनी विशेषता है अपना धरोहर है। कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर के नाटक रंगमंचीयता की सारी खूबियों से भरे पडे हैं और इसलिए ही रंगमंच पर खडे उतरे हैं। अंकविभाजन की परंपरागत तरीका इनके कुछ नाटकों में उड गया है। 'दयाशंकर की डायरी', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी', 'लश्करचौक', 'जी जैसी आपकी मर्जी' आदि इसका उदाहरण है। 'दयाशंकर की डायरी' में डायरी के पन्ने के पलटने के साथ-ही दृश्य बदलता है। 'सकुबाई', 'दयाशंकर की डायरी' आदि एकल नाट्य की शैली में लिखा गया है। प्रकाश-योजना, ध्वनि प्रयोग, गीत-योजना आदि रंगमंचीय तत्वों के प्रयोग में इनके नाटक कुछ अलग मायना रखते हैं। फेड आउट, फेट इन आदि नये प्रयोग इनके नाटकों में प्रकाश योजना के अन्तर्गत मिलते हैं। फ्लैश बैक शैली का प्रयोग दोनों ने

स्वीकारा है। 'सुमन और सना' कोल्लाश की शैली में लिखा गया है। कीर्तन, भजन, कोरस, बिजली का कडक जैसे प्रयोग इन दोनों के नाटकों की ध्वन्यात्मक विशेषतायें है। मंचन की दृष्टि से कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर के सारे नाटक एक हद तक कामयाब हुए हैं। कुसुम कुमार के सारे नाटक कई प्रमुख निर्देशकों के निर्देशन में रंगमंच पर प्रस्तुत हुए हैं। नादिरा ज़हीर बब्बर के नाटक उन्हीं के द्वारा संचालित 'एकजुट' नामक संस्था द्वारा निर्देशित तथा अवतरित हुए। इस प्रकार कह सकते हैं कि कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर दोनों ने अपने नाटकों के माध्यम से अपनी सर्जनात्मक क्षमता का परिचय कराने के साथ-साथ अपने सामाजिक सरोकार को भी प्रत्यक्ष दर्शाये हैं। उनके हर एक नाटक समाज में आम आदमी की दर्द भरी कहानी का सच्चा बयान है जिसें अधिकारी वर्ग की आँखें खोलने की ताकत समाहित है। दोनों ने अपने नाटकों में वर्तमान समाज की विभिन्न समस्याओं को चित्रित करते हुए जनता को वस्तु स्थिति से अवगत कराकर सही रास्ता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। अतः कह सकते है कि डॉ. कुसुम कुमार और नादिरा ज़हीर बब्बर दोनों ने अपने नाटक के द्वारा पूरे हिन्दी नाट्य साहित्य केलिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है।